एम. ए जैनविद्या एवं प्राकृत प्रथम सेमेस्टर	
पाठ्यक्रम कूट संख्या	PKT8000T
पाठ्यक्रम क्रमांक	I
पाठ्यक्रम का नाम	प्राकृत भाषा एवं साहित्य की परंपरा एवं इतिहास
पाठ्यक्रम का योग्यता स्तर	एन.एच.ई.क्यू.एफ. स्तर 6.0
पाठ्यक्रम की क्रेडिट	4
पाठ्यक्रम का प्रकार	डी.सी.सी. (Discipline Centric Compulsory Course)
पाठ्यक्रम का पाठन प्रकार	40 व्याख्यान, 10 रचनात्मक एवं नैदानिक मूल्यांकन और 10 ट्युटोरियल
पाठ्यक्रम पठन की पूर्व – योग्यता	स्नातक उत्तीर्णता OR एन.एच.ई.क्यू.एफ. स्तर 5.5
पाठ्यक्रम उद्देश्य	इस पत्र से विद्यार्थियों को प्राकृत भाषा के सामान्य अर्थ, प्राचीनता तथा वैदिक एवं आधुनिक भाषाओं के अन्तःसम्बन्ध को जान सकेंगे। इसके अतिरिक्त प्राकृत के रूपगठन और व्याकरण का ज्ञान विद्यार्थियों को कराया जायेगा।
पाठ्यक्रम अधिगम के परिणाम	1. विद्यार्थी प्राकृत भाषा एवं साहित्य की प्राचीनता, इतिहास और विकास का अनुशीलन कर सकेंगे। 2. विद्यार्थियों में प्राचीन भाषाओं का ज्ञान विकसित होगा। 3. विद्यार्थी ज्ञान विज्ञान के प्राचीन स्रोतों की तरफ उन्मुख हो सकेंगे। 4. विद्यार्थियों में प्राकृत भाषा की समझ विकसित होगी।

पाठ्यक्रम		Study Hours 60
इकाई - I	प्राकृत भाषा का सामान्य परिचय, महत्ता एवं उसकी प्राचीनता के संदर्भ	12
इकाई - II	भारतीय भाषाएँ वैदिक एवं आधुनिक और प्राकृत का अन्तःसम्बन्ध एवं वैशिष्ट्य, प्राकृत भाषा के विभिन्न रूपों के रूपगठन के नियम एवं वैशिष्ट्य	12
इकाई - III	प्राकृत भाषा के भेद-प्रभेद, प्राकृत साहित्य की विविधता का परिचयात्मक विश्लेषण, प्राकृत शिलालेखों में प्रयुक्त प्राकृत भाषा- स्वरूप एवं वैशिष्ट्य	12
इकाई - IV	आगम साहित्य का सर्वेक्षण: आगमिक परिचय, वाचनाएँ, आगमिक व्याख्या साहित्य- अर्द्धमागधी एवं शौरसेनी आगमिक व्याख्या ग्रन्थ	12
इकाई - V	प्राकृत रचनानुवाद एवं अभ्यास: कारक/ विभक्ति रचना (संज्ञा एवं सर्वनाम प्रयोग), क्रियारूप एवं कृदन्त के प्रयोग-रचना एवं अभ्यास	12
सहायक पुस्तकें	1. जैन साहित्य का वृहत् इतिहास, भाग 1 - पं. बेचरदास दोशी, पार्श्वनाथ विद्याआश्रम शोध संस्थान, वाराणसी- 1989 2. जैन आगम साहित्य: मनन और मीमांसा - आचार्य देवेन्द्र मुनि शास्त्री, श्री तारक गुरु जैन ग्रंथालय, उदयपुर – 2012 3. इन्ट्रोडक्शन टू अर्धमागधी - डॉ. ए. एम. घाटगे, स्कूल एंड कॉलेज बुक स्टाल, कोल्हापुर - 1981 4. प्राकृत भाषाओं का व्याकरण - डॉ. आर. पिशेल (हिंदी संस्करण) बिहार राष्ट्र भाषा परिषद्, पटना – 1958 5. प्राकृत भाषा एवं साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास - डॉ. नेमिचन्द शास्त्री, तारा बुक एजेंसी, वाराणसी- 2014 6. प्राकृत भाषा से अनुप्राणित भारतीय भाषाएँ – संपादन - डॉ. ज्योतिबाबू जैन, भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली - 2022 7. प्राकृत स्वंय शिक्षक - डॉ. प्रेम सुमन जैन, प्राकृत भारती अकादमी, जयपुर 8. प्राकृत रचना सौरभ - डॉ. के. सी. सोगानी, अपभ्रंश साहित्य अकादमी, जयपुर 2000 9. जैन धर्म - आचार्य सुशील मुनि, आचार्य सुशील प्रकाशन, नई दिल्ली –	

एम. ए जैनविद्या एवं प्राकृत प्रथम सेमेस्टर	
पाठ्यक्रम कूट संख्या	PKT8001T
पाठ्यक्रम क्रमांक	II
पाठ्यक्रम का नाम	अर्धमागधी एवं प्राकृत कवि
पाठ्यक्रम का योग्यता स्तर	एन.एच.ई.क्यू.एफ. स्तर 6.0
पाठ्यक्रम की क्रेडिट	4
पाठ्यक्रम का प्रकार	डी.सी.सी. (Discipline Centric Compulsory Course)
पाठ्यक्रम का पाठन प्रकार	40 व्याख्यान, 10 रचनात्मक एवं नैदानिक मूल्यांकन और 10 ट्युटोरियल
पाठ्यक्रम पठन की पूर्व – योग्यता	स्नातक उत्तीर्णता OR एन.एच.ई.क्यू.एफ. स्तर 5.5
पाठ्यक्रम उद्देश्य	इस पत्र से विद्यार्थियों को प्राकृत भाषा जैनाचार और आगम साहित्य की सामान्य जानकार अर्थ□ प्राचीनता तथा वैदिक एवं आधुनिक भाषाओं के अन्तःसम्बन्ध को जान सकेंगे। इसके अतिरिक्त अर्धमागधी–प्राकृत के रूपगठन और व्याकरण का ज्ञान विद्यार्थियों को कराया जायेगा। इसके साथ–साथ प्रमुख जैन आगम एवं आगमेतर आचार्यों/प्राकृत रचनाकारों के जीवन–परिचय से अवगत कराया जायेगा। इस तरह प्राकृत व्याकरण के अभ्यास के माध्यम से विद्यार्थियों को लाभान्वित किया जायेगा।
पाठ्यक्रम अधिगम के परिणाम	1. विद्यार्थी अर्धमागधी प्राकृत भाषा एवं इस भाषा में रचित आगमों का अध्ययन कर पाएंगे□ 2. अर्धमागधी प्राकृत साहित्य की जानकारी को प्राप्त कर सकेंगे□ 3. विद्यार्थियों में अर्धमागधी प्राकृत भाषा की समझ विकसित होगी। 4. प्राकृत काव्य परंपरा एवं उसके रचनाकारों का ज्ञान हो सकेगा□

पाठ्यक्रम		Study Hours 60
इकाई - I	आचारांग सूत्र (प्रथम श्रुत स्कन्ध) प्रथम अध्ययन, सत्थपरिण्णा का अर्थ एवं समीक्षा	12
इकाई - II	आचारांग सूत्र - द्वितीय अध्ययन लोकविजय का अर्थ एवं समीक्षा	12
इकाई - III	णायधम्मकहा - पांचवां थावच्चापुत्त अध्ययन एवं सातवां रोहिणी अध्ययन	12
इकाई - IV	प्राकृत आगम प्राकृत के प्रमुख कवि: महाकवि हाल, विमलसूरि, संघदासगणि, शिवार्य, आचार्य जिनदत्तसूरि, नेमिचन्द्र सिद्धान्त चक्रवर्ती, देवेन्द्रगणि	12
इकाई - V	अर्द्धमागधी प्राकृत भाषा का सोदाहरण विवेचन, संज्ञा, सर्वनाम या क्रिया एवं कृदन्त के प्रमुख नियम एवं उदाहरण	12
सहायक पुस्तकें	1. प्राकृत साहित्य का इतिहास - डॉ. जगदीश चन्द्र जैन, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी - 1961 2. जैन आगम साहित्य: मनन और मीमांसा - आचार्य देवेन्द्र मुनि शास्त्री, श्री तारक गुरु जैन ग्रंथालय, उदयपुर - 2012 3. इन्ट्रोडक्शन टू अर्धमागधी - डॉ. ए. एम. घाटगे, स्कूल एंड कॉलेज बुक स्टाल, कोल्हापुर - 1981 4. प्राकृत भाषाओं का व्याकरण - डॉ. आर. पिशेल (हिंदी संस्करण) बिहार राष्ट्र भाषा परिषद्, पटना - 1958 5. आगम युग का जैन दर्शन - पं. दलसुख मालवणिया, प्राकृत भारती, 1990 6. प्राकृत भाषा एवं साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास - डॉ. नेमिचन्द शास्त्री, तारा बुक एजेंसी, वाराणसी 2014 7. आयारो - जैन विश्व भारती, लाडनूं (राज.) 8. आचारांग सूत्र - व्याख्या - श्री आत्माराम जी, आत्मज्ञान श्रमण शिव आगम प्रकाशन समिति, लुधियाना 2003 9. ज्ञाताधर्म कथा. यु. मधुकर मुनि, आगम प्रकाशन समिति, ब्यावर	

एम. ए जैनविद्या एवं प्राकृत प्रथम सेमेस्टर	
पाठ्यक्रम कूट संख्या	PKT8002T
पाठ्यक्रम क्रमांक	III
पाठ्यक्रम का नाम	शौरसेनी प्राकृत
पाठ्यक्रम का योग्यता स्तर	एन.एच.ई.क्यू.एफ. स्तर 6.0
पाठ्यक्रम की क्रेडिट	4
पाठ्यक्रम का प्रकार	डी.सी.सी. (Discipline Centric Compulsory Course)
पाठ्यक्रम का पाठन प्रकार	40 व्याख्यान, 10 रचनात्मक एवं नैदानिक मूल्यांकन और 10 ट्युटोरियल
पाठ्यक्रम पठन की पूर्व – योग्यता	स्नातक उत्तीर्णता OR एन.एच.ई.क्यू.एफ. स्तर 5.5
पाठ्यक्रम उद्देश्य	इस पत्र से विद्यार्थियों को जैन तत्त्वविद्या, द्रव्यमीमांसा, इन्द्रिय-कषाय-विजय तथा सप्तव्यसन त्याग का अध्ययन शौरसेनी ग्रन्थों को आधार बनाकर कराया जायेगा। शौरसेनी आगम साहित्य की परम्परा का ज्ञान और उसके व्याकरण के नियमों का सोदाहरण प्रयोग इस पत्र के माध्यम से हो सकेगा।
पाठ्यक्रम अधिगम के परिणाम	1. विद्यार्थी शौरसैनी प्राकृत भाषा एवं इस भाषा में रचित आगमों का अध्ययन कर पाएंगे□ 2. शौरसैनी प्राकृत साहित्य की जानकारी को प्राप्त कर सकेंगे□ 3. विद्यार्थियों में शौरसैनी प्राकृत भाषा की समझ विकसित होगी। 4. शौरसैनी प्राकृत में रचित गाथाबद्ध काव्यग्रंथों से प्राचीन काव्य परंपरा का ज्ञान प्राप्त होगा□

पाठ्यक्रम		Study Hours 60
इकाई - I	प्रवचनसार (ज्ञानाधिकार) - आचार्य कुन्दकुन्द गाथा - 1-92, अनुवाद एवं समीक्षा	12
इकाई - II	द्रव्यसंग्रह (नेमिचन्द्राचार्य) - व्याख्या एवं समीक्षा	12
इकाई - III	भगवती आराधना - शिवार्य 1354 से 1433 गाथाएँ	12
इकाई - IV	शौरसेनी आगम साहित्य का सर्वेक्षण	12
इकाई - V	शौरसेनी प्राकृत भाषा का सोदाहरण विवेचन (अभिनव प्राकृत व्याकरण अध्ययन 10, पृ. 383-99 तक)	12
सहायक पुस्तकें	1. प्रवचनसार, सम्पा. ए.एन.उपाध्ये (भूमिका), श्री परमश्रुत प्रभावक मंडल, अगास - 2012 2. द्रव्यसंग्रह - नेमिचन्द्र सिद्धान्त चक्रवर्ती, जैन विद्यापीठ, सागर - 2017 3. भगवती आराधना (भावार्थ) भाग 2, संपादन - पं. के.सी. शास्त्री, जैन संस्कृति संरक्षक संघ, सोलापुर – 1978 4. भगवान महावीर और उनकी आचार्य परम्परा भाग-2, डॉ. नेमिचन्द शास्त्री, आ. शान्तिसागर छाणी ग्रंथमाला, बुढाना, मुज्जफरनगर – 1992 5. अभिनव प्राकृत व्याकरण - डॉ. नेमिचन्द शास्त्री, जैन विद्यापीठ, सागर - 2017 6. शौरसेनी प्राकृत भाषा और व्याकरण - डॉ. प्रेम सुमन जैन, भारतीय विद्या प्रकाशन, नई दिल्ली- 2001 7. जैन संस्कृति कोश - डॉ.भागचन्द जैन, भाग 1 से 3, सन्मति प्राच्य शोध संस्थान, नागपुर 2002 8. शौरसेनी प्राकृत व्याकरण - डॉ. उदय चन्द जैन, आगम अहिंसा शोध संस्थान, उदयपुर शौरसेनी प्राकृत भाषा साहित्य का संक्षिप्त इतिहास - प्रो.राजा राम जैन	

एम. ए जैनविद्या एवं प्राकृत प्रथम सेमेस्टर	
पाठ्यक्रम कूट संख्या	PKT8003T
पाठ्यक्रम क्रमांक	IV
पाठ्यक्रम का नाम	कथा साहित्य, मुक्तक एवं परम्परा
पाठ्यक्रम का योग्यता स्तर	एन.एच.ई.क्यू.एफ. स्तर 6.0
पाठ्यक्रम की क्रेडिट	4
पाठ्यक्रम का प्रकार	डी.सी.सी. (Discipline Centric Compulsory Course)
पाठ्यक्रम का पाठन प्रकार	40 व्याख्यान, 10 रचनात्मक एवं नैदानिक मूल्यांकन और 10 ट्युटोरियल
पाठ्यक्रम पठन की पूर्व – योग्यता	स्नातक उत्तीर्णता OR एन.एच.ई.क्यू.एफ. स्तर 5.5
पाठ्यक्रम उद्देश्य	प्राकृत कथा साहित्य की अतिसमृद्ध परम्परा है। इसमें लगभग चौथी–पाँचवीं शताब्दी से कथाएँ प्राकृत में लिखी जाती रहीं। कुवलयमालाकथा तथा वज्जालग्गं ग्रन्थ प्राकृत चम्पू एवं मुक्तक काव्यसाहित्य के प्रतिनिधि ग्रन्थ हैं जिनका अध्ययन इस पत्र के माध्यम से होगा। काव्य के दोनों परम्पराओं के इन ग्रन्थों में विद्यमान विभिन्न मूल्यों का विश्लेषण कराया जायेगा। इसके साथ–साथ प्राकृत वाक्य रचना के नियमों और अभ्यास की जानकारी विद्यार्थियों को दी जायेगी।
पाठ्यक्रम अधिगम के परिणाम	1. विद्यार्थी कथाकाव्य ग्रंथों में प्रयुक्त महाराष्ट्री प्राकृत भाषा का ज्ञान प्राप्त करेंगे□ 2. कुवलयमाला के चम्पूकाव्यत्व का अधिगम करेंगे□ 3. वज्जालग्गं के अध्ययन से जीवन मूल्यों की समझ विकसित होगी□ 4. प्राकृत से मातृभाषा और मातृभाषा से प्राकृत में वाक्यों की संरचना का ज्ञान प्राप्त करेंगे□ 5. प्राकृत भाषा एवं साहित्य की परम्परा के इतिहास का सामान्य ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे□

	पाठ्यक्रम	Study Hours 60
इकाई - I	कुवलयमाला (उद्योतनसूरि) अनुच्छेद 1-12 तक	12
इकाई - II	वज्जालग्गं की 50गाथाओं का व्याकरणात्मक मूल्यांकन एवं अनुवाद, सम्पा. वज्जालग्गं में जीवन मूल्य - डॉ.के.सी.सोगानी, गाथा 1-20 एवं गाहारयणकोस मुक्तक काव्य का सामान्य परिचय	12
इकाई - III	पठित ग्रन्थों का भाषागत एवं आलोचनात्मक अध्ययन	12
इकाई - IV	प्राकृत रचना सौरभ (डॉ.के.सी.सोगानी) के पाठ 1 से 41 तक का अभ्यास, आठ वाक्यों का प्राकृत से हिन्दी में अनुवाद पूछना	12
इकाई - V	प्राकृत की परम्परा का परिचय (प्राकृत भाषा एवं साहित्य की परम्परा के इतिहास का सामान्य ज्ञान)	12
सहायक पुस्तकें	1. कुवलयमाला भाग-2, सम्पा. डॉ. ए. एन. उपाध्ये, भारतीय विद्या भवन, मुंबई – 1970 2. कुवलयमालाकथा का सांस्कृतिक अध्ययन - प्रो. डॉ. प्रेम सुमन जैन, प्राकृत जैनशास्त्र एवं अहिंसा शोध संस्थान, वैशाली, बिहार 1975 3. प्राकृत रचना सौरभ - डॉ. के. सी. सोगानी, अपभ्रंश साहित्य अकादमी, जयपुर 2000 4. जैन धर्म - आचार्य सुशील मुनि, आचार्य सुशील प्रकाशन, नई दिल्ली 5. प्राकृत स्वंय शिक्षक - डॉ. प्रेम सुमन जैन, प्राकृत भारती अकादमी, जयपुर 2015 गाहारयणकोस, जिनेश्वरसूरी, सम्पा. अनु. डॉ. सुमत कुमार जैन, राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली. २०१८	

एम. ए जैनविद्या एवं प्राकृत प्रथम सेमेस्टर	
पाठ्यक्रम कूट संख्या	PKT8004T
पाठ्यक्रम क्रमांक	V
पाठ्यक्रम का नाम	प्रकरण एवं पालि
पाठ्यक्रम का योग्यता स्तर	एन.एच.ई.क्यू.एफ. स्तर 6.0
पाठ्यक्रम की क्रेडिट	4
पाठ्यक्रम का प्रकार	डी.सी.सी. (Discipline Centric Compulsory Course)
पाठ्यक्रम का पाठन प्रकार	40 व्याख्यान, 10 रचनात्मक एवं नैदानिक मूल्यांकन और 10 ट्युटोरियल
पाठ्यक्रम पठन की पूर्व – योग्यता	स्नातक उत्तीर्णता OR एन.एच.ई.क्यू.एफ. स्तर 5.5
पाठ्यक्रम उद्देश्य	इस पत्र से विद्यार्थियों को प्राकृत नाट्यशास्त्र का अध्ययन प्रकरण ग्रन्थ मृच्छकटिकम् के आधार पर कराया जायेगा। मृच्छकटिकम् में प्रयुक्त विभिन्न प्राकृतों के ज्ञान से विद्यार्थी लाभान्वित हो सकेंगे। पालि साहित्य और भाषा की सामान्य जानकारी के साथ–साथ बौद्ध त्रिपिटक के ग्रन्थ धम्मपद के द्वारा अहिंसा अप्रमाद जैसे मूल्यों का अध्ययन इस पत्र के माध्यम से हो सकेगा।
पाठ्यक्रम अधिगम के परिणाम	1. विद्यार्थी भारतीय नाट्य परम्परा और मृच्छकटिकम् में प्रयुक्त बहुविध प्राकृत भाषाओँ का ज्ञान प्राप्त करेंगे□ 2. विद्यार्थियों में मृच्छकटिकम् के अध्ययन से लोगों के सामान्य जीवन में प्रयोग किये जाने वाली जनभाषा प्राकृत की समझ विकसित होगी□ 3. पालि साहित्य और भाषा की सामान्य जानकारी प्राप्त करेंगे□ 4. धम्मपद के अध्ययन से विद्यार्थियों में नैतिक मूल्यों के प्रति समझ बढ़ेगी□

पाठ्यक्रम		Study Hours 60
इकाई - I	मृच्छकटिक - महाकवि शूद्रक अंक 1, 2, 6 एवं 8वां (प्राकृत अंश मात्र गद्य एवं पद्य)	12
इकाई - II	पठित ग्रन्थ का भाषागत विवेचन एवं चरित्र-चित्रण	12
इकाई - III	धम्मपद (प्रथम यमक एवं द्वितीय अप्पमाद वग्ग)	12
इकाई - IV	पालि भाषा एवं साहित्य का परिचय	12
इकाई - V	पठित ग्रन्थों का आलोचनात्मक अध्ययन (मृच्छकटिक एवं धम्मपद)	12
सहायक पुस्तकें	1. महाकवि शूद्रक - डॉ. रमाशंकर त्रिपाठी, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी – 1967 2. धम्मपद - डा. सत्य प्रकाश शर्मा, प्रकाशक साहित्य भण्डार, मेरठ – 2012 3. प्राकृत भाषा एवं साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास - डॉ. नेमिचन्द शास्त्री, तारा बुक एजेंसी, वाराणसी 2014 4. प्राकृत साहित्य का इतिहास - डॉ. जगदीश चन्द्र जैन, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी – 1961 5. प्राकृत साहित्य की रूपरेखा - डा. तारा डागा, प्राकृत भारती अकादमी, जयपुर इन्ट्रोडक्शन, 6. मृच्छकटिक एक आलोचनात्मक अध्ययन - डॉ. सुषमा, इंडो विजन प्राइवेट लिमिटेड, गाजियाबाद - 1985 7. पालि साहित्य का इतिहास - भरत सिंह उपाध्याय, हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग – 2008 8. मृच्छकटिकम् - व्याख्या - डॉ. जयशंकरलाल त्रिपाठी, चौखम्बा कृष्णदास अकादमी, वाराणसी – 2021 स्टडी ऑफ मृच्छकटिकम् - डॉ. जी. वी. देवस्थली	

एम. ए जैनविद्या एवं प्राकृत प्रथम सेमेस्टर	
पाठ्यक्रम कूट संख्या	PKT8005T
पाठ्यक्रम क्रमांक	VI
पाठ्यक्रम का नाम	जैनधर्म दर्शन एवं महात्मा गाँधी
पाठ्यक्रम का योग्यता स्तर	एन.एच.ई.क्यू.एफ. स्तर 6.0
पाठ्यक्रम की क्रेडिट	4
पाठ्यक्रम का प्रकार	डी.सी.सी. (Discipline Centric Compulsory Course)
पाठ्यक्रम का पाठन प्रकार	40 व्याख्यान, 10 रचनात्मक एवं नैदानिक मूल्यांकन और 10 ट्युटोरियल
पाठ्यक्रम पठन की पूर्व – योग्यता	स्नातक उत्तीर्णता OR एन.एच.ई.क्यू.एफ. स्तर 5.5
पाठ्यक्रम उद्देश्य	प्राकृत साहित्य में जैनधर्म–दर्शन का विवेचन सर्वत्र किया गया है। अहिंसा समता की अवधारणा का सामाजिक पक्ष और श्रमणधर्म की चर्या का विवेचन इस पत्र में किया गया है विद्यार्थी जैनधर्म के आलोक में इनका अध्ययन कर सकेंगे। अनेकान्त जैनदर्शन का प्राण है जो वस्तुस्वरूप का सम्यक् विश्लेषण कराना सिखाता है। इससे भी विद्यार्थी लाभान्वित होगें। गाँधी–चिन्तन के अन्तर्गत उनके जीवनदर्शन, ईश्वरवादी चिन्तन सत्य की मीमांसा और उनके सामाजिक सरोकारों का अध्ययन कराया जायेगा।
पाठ्यक्रम अधिगम के परिणाम	1. विद्यार्थी जैनधर्म के प्रमुख सिद्धांत अनेकांतवाद, समता एवं अहिंसा की समझ विकसित होगी□ 2. गाँधी–चिन्तन के अन्तर्गत उनके जीवनदर्शन का अध्ययन कर महात्मा गांधी के अवदान को जान पाएंगे□डी गाँधी के ईश्वरवादी चिन्तन, सत्य की मीमांसा और उनके सामाजिक सरोकारों को जान पाएंगे□

पाठ्यक्रम		Study Hours 60
इकाई - I	जैन धर्म, दर्शन का परिचय एवं विश्लेषण - अहिंसा, पंच महाव्रत, अनेकान्तवाद, समता एवं उसका स्वरूप	12
इकाई - II	भारतीय संस्कृति में जैन धर्म का प्रभाव	12
इकाई - III	महात्मा गाँधी का जीवन परिचय एवं गांधीवादी विचार - ईश्वर, सत्य, अहिंसा, पर्यावरण विज्ञान	12
इकाई - IV	महात्मा गांधी पर जैन धर्म का प्रभाव	12
इकाई - V	महात्मा गांधी के विचारों का भारतीय समाज पर प्रभाव	12
सहायक पुस्तकें	1. जैन धर्म - डॉ. कैलाश चन्द्र शास्त्री, जीवराज जैन ग्रंथमाला, सोलापुर – 1963 2. जैन धर्म - आ. सुशील मुनि, आचार्य सुशील प्रकाशन, नई दिल्ली 3. भारतीय संस्कृति में जैन धर्म का योगदान - डॉ. हीरालाल जैन, मध्यप्रदेश शासन साहित्य परिषद्, भोपाल 1975 4. जैन संस्कृति और पर्यावरण संरक्षण - प्रो. प्रेम सुमन जैन, साहित्य निकेतन, जयपुर - 2022 5. गांधी और मानवता का भविष्य - प्रो. रामजी सिंह, मानक प्रकाशन 1997 6. गांधी दृष्टि - प्रो. रामजी सिंह – अर्जुन प्रकाशन, 2010 7. अहिंसा की बोलती मीनारें - राष्ट्रसन्त गणेशमुनि शास्त्री, सन्मति ज्ञानपीठ, आगरा – 1968 8. जैन धर्म - डॉ. जगदीश चन्द्र जैन 9. जैन धर्म, दर्शन - डॉ. रमेश चन्द्र जैन 10. गांधी, गीता एवं जैन धर्म - प्रो. सागरमल जैन	